संस्थान समाचार

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी) संस्था और उसके केंद्रों की समाचार पत्रिका

■ प्रकाशन : वर्ष : 11 ■ अंक : 75 ■ नवम्बर 2025

राष्ट्रगीत की 150वीं वर्षगाँठ

भारत के राष्ट्रीय गीत "वंदे मातरम्" की रचना के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में देशभर में दिनांक 07.11.2025 को विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा 1875 में लिखे गए इस अमर गीत ने स्वतंत्रता आंदोलन की जन-जागरण शक्ति को नई दिशा दी थी। इसकी डेढ़ सौवीं जयंती पर केंद्रीय हिंदी संस्थान के मुख्यालय सहित सभी क्षेत्रीय केंद्रों पर राष्ट्रगीत सामूहिक गायन आयोजित किया गया।

केंद्रीय हिंदी संस्थान के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में 'वंदे मातरम्' गीत के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में 'वंदे मातरम' गीत का सामूहिक गायन किया गया। प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'वंदे मातरम गीत भारत माता के प्रति हमारी भक्ति, निष्ठा और प्रेम का प्रतीक है। यह गीत हर भारतीय के हृदय में जोश, साहस और देशभक्ति भर देता है। यह गीत भारतीय समाज को एकता, साहस और त्याग का संदेश देता है तथा हमारी पहचान हमारी संस्कृति और हमारी राष्ट्रीय भावना का प्रतीक है। कार्यक्रम के दौरान निदेशक महोदय द्वारा देश की एकता और अखंडता बनाए रखने की शपथ दिलाई गयी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्रो. चंद्रकांत कोठे, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने कहा कि 'वंदे मातरम' गीत केवल एक गीत ही नहीं है, बल्कि यह हमारी आजादी का एक अमर उद्घोष है। इस गीत को महान साहित्यकार बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने लिखा था।

उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान यह गीत क्रांतिकारियों का मनोबल बढ़ाने वाला मंत्र बन गया था। 'वंदे मातरम' गीत हमें देशभक्ति, जिम्मेदारी तथा कर्तव्य पालन सिखाता है। हम सबका दायित्व है कि हम अपने देश के विकास में योगदान दें।

कार्यक्रम में प्रो. हरिशंकर शैक्षिक समन्वयक, केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, सभी विभागों के विभागाध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता, डॉ. मीनाक्षी दुबे, डॉ. मयंक त्रिपाठी, डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी डॉ. अंकुश तुलसीराम औंधकर कुलसचिव (प्रभार), केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं सभी शैक्षिक सदस्य डॉ. तस्मीना हुसैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. भास्कर कृष्णाजी ठुबे, डॉ. राजश्री, डॉ. प्रणीता मिश्रा, डॉ. सुनीता शर्मा, डॉ. नीलम मिश्रा, डॉ. ऊषा शर्मा, सभी प्रशासनिक सदस्य उपस्थित रहे।

अनेकता में एकता का प्रतिनिधित्व करती है हिंदी: प्रो. चक्रधर

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में दिनांक 8-9 नवंबर 2025 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा "भारतीय भाषा विज्ञानः परंपरा और आधुनिक संदर्भ" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी में उद्घाटन तथा समापन समेत कुल 8 सत्र आयोजित किए गए। संस्थान के माननीय निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में दिनांक 08 नवंबर को उद्घाटन सत्र के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के पूर्व उपाध्यक्ष प्रो. अशोक चक्रधर, विशिष्ट

अतिथि के रूप में प्रो. एम.जे. वारसी; बीज वक्ता के रूप में प्रो. रजनीश मिश्र, संस्थान के सदस्यों में प्रो. हरिशंकर, डॉ. जोगेंद्र सिंह मीना, डॉ. अंकुश औंधकर, देश के विविध प्रांतो से पधारे विद्वान, भाषाविज्ञानी और शिक्षाविद - प्रो. त्रिभुवन शुक्ल, प्रो. राम सुधार सिंह, प्रो. गिरीश नाथ झा, डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. अरुप कुमार नाथ, डॉ. अपर्णा झा, डॉ. गोपालराम, प्रो. निलाद्री शेखर दास सर, डॉ. पी. श्रीकुमार आदि मौजूद रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए माननीय निदेशक ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को संदर्भित करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा को भारत के साथ-साथ समस्त विश्व के लिए महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि "भारत की भाषायी चिंतन परंपरा प्राचीन है और उसका आज पुनर्मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। भाषाविज्ञान, ध्वनि विज्ञान, वाक्य विज्ञान से संबंधित प्राचीन अवधारणाओं को विद्यार्थियों के समक्ष रखने की आवश्यकता है जिससे उन्हें यह ज्ञान हो कि भारत का भाषाविज्ञान-चिंतन अमृत का पुंज है।" बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए प्रो. रजनीश मिश्र ने भाषा विज्ञान के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को रेखांकित करते हुए कहा कि "भाषा हमारे यहाँ निरंतर प्रयोग में चली आ रही वस्तु है।

शेष पृष्ठ 7 पर

अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग का सत्रारंभ समारोह

दिनांक 08 नवंबर, 2025 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग के शैक्षिक सत्र 2025-26 का औपचारिक सत्रारंभ कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम में अध्यक्षता हेतु केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी मुख्य अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी निदेशालय (नई दिल्ली) के निदेशक प्रो. हितेन्द्र मिश्र तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में आगरा कॉलेज, आगरा के प्राचार्य प्रो. सी.के. गौतम जुड़े। इस कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्जवलन एवं माँ सरस्वती पर माल्यार्पण से हुआ। इसके पश्चात अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग की प्राध्यापिका डॉ. शमा द्वारा स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जोगेन्द्र सिंह मीणा द्वारा संस्थान एवं विभागीय परिचय दिया गया। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियो द्वारा उनके विचार भी प्रस्तुत किए गए। इस क्रम में सबसे पहले चाड के मौ. ताहिर व तुर्क मे निस्तान से मौ. कादिर व मिस्र से रिहाव तथा उज्बेकिस्तान से मखलियोव मौ. फरीद मिस्र तथा श्रीलंका से विजय तथा दक्षिण अफ्रीका से सुष्मिता ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ भी हुई जिनका आरंभ विदेशी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से हुआ उसके बाद स्वदेशी प्रस्तुतियाँ दी गई। इस कार्यक्रम में 16 प्रस्तुतियाँ दी गई। इस क्रम में सबसे पहले थाईलैंड कमल नृत्य, उसके पश्चात श्रीलंका समूह नृत्य फिर ताजिकिस्तान एकल नृत्य फिर ईरान से युगल नृत्य तत्पश्चात वियतनाम एकल तथा उज्बेकिस्तान युगल नृत्य,उसके बाद मंगोलिया एकल नृत्य प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में एक योग प्रस्तुति भी दी गई। फिर छात्रों द्वारा सामुहिक गीत की प्रस्तुति दी गई। इस कार्यक्रम में छात्रों द्वारा भारतीय नृत्य भी प्रस्तुत किए गए। जिसमें कथक, लावणी, राजस्थानी, हरियाणवी जैसे नृत्य प्रस्तुत किए गए।

इस कार्यक्रम में उपस्थित माननीय निदेशक महोदय प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी मुख्य अतिथि प्रो. हितेन्द्र मिश्र तथा विशिष्ट अतिथि प्रो. सी.के. गौतम ने विद्यार्थियों को आर्शीवचन दिए। इस कार्यक्रम का संचालन अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग की प्राध्यापिका सुश्री रिया सिंह ने किया। इस कार्यक्रम की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापनविभाग की प्राध्यापिका डॉ. रेणु चौधरी ने दिया। कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग के सभी प्राध्यापक डॉ. परमान सिंह, डॉ. अरविंद कुमार रावत, डॉ. अरविंद कुमार शुक्ला विभागाध्यक्ष प्रो. चंद्रकांत कोठे, डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी तथा सभी शिक्षक व विदेशी तथा स्वदेशी विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

विश्व रंग में शास्त्रीय प्रस्तुति

दिनांक 27 से 29 नवंबर तक भोपाल मध्य प्रदेश में रवीन्द्रनाथ टैगोर यूनिवर्सिटी द्वारा तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी तथा विश्व रंग 2025 का भव्य आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग द्वारा डॉ रेणु चौधरी के नेतृत्व में 10 देशों के छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। सभी छात्रों ने इस आयोजन में विभिन्न साहित्यिक तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ देकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। मुख्य रूप से वियतनाम की छात्रा हुआंग क्वीन को मुख्य मंच पर मंगलाचरण के अंतर्गत होने वाले शास्त्रीय संगीत में तबला वादन की प्रस्तुति का अवसर मिला। जो संस्थान के लिए एक विशेष गौरव का क्षण था। इस आयोजन में 40 से अधिक देशों के विद्वान सम्मिलित हुए।

एक ही सिक्के के दो पहलू हैं शब्द और संप्रेषण

भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम

नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा दिनांक 18.11.2025 से 02.12.2025 तक राजकीय हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, इंफाल (मणिपुर) के बी.एड. पाठ्यक्रम के 18 प्रशिक्षणार्थियों हेतु हिंदी भाषा संवर्धनात्मक पाठ्यक्रम संचालित किया गया। पाठ्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 18.11.2025 को प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की अध्यक्षता में किया गया। उन्होंने हिंदी के व्याकरण पर जोर देने की बात कही, साथ ही यह भी कहा कि संप्रेषण एवं शब्द एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। प्रतिकूल परिस्थिति में ही साधना होती है। विशिष्ट अतिथि के रूप में पुणे महाराष्ट्र से पधारे प्रो. महेंद्र ठाकुर दास की गरिमामयी उपस्थिति रही। उन्होंने कहा कि, 'मणिपुर-भारत का मुकुट मणि है, वहाँ के लोग मेहनती एवं परिश्रमी होते हैं। हमें विश्व ज्ञान ग्रहण करना है और प्राचीन संस्कृति से भी जुड़े रहना है। भाषा का संवर्धन हमारे व्यक्तित्व को विकसित करता है।' राजकीय हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, इंफाल (मणिपुर) से पधारे सहायक प्राध्यापक डॉ. मंगलेंबा सिंह एवं क्लर्क जी. निशांत शर्मा, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. सपना गुप्ता, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे, अनुसंधान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का

संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा किया गया।

उक्त पाठ्यक्रम में निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी, शैक्षिक समन्वयक प्रो. हरिशंकर, अनुसंधान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी द्वारा विशेष व्याख्यान दिए गए। प्रो. सपना गुप्ता द्वारा शैक्षिक अध्ययन की कक्षाएँ ली गई। पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे द्वारा हिंदी भाषा एवं साहित्य का परिचय की कक्षाएँ ली गईं। डॉ. शिखा माहेश्वरी द्वारा अन्य भाषा हिंदी शिक्षण एवं हिंदी भाषा परिमार्जन की कक्षाएँ ली गई। डॉ. अनामिका गुप्ता द्वारा हिंदी भाषा की संरचना एवं भाषा तुलना प्रविधि एवं भाषा विज्ञान की कक्षाएँ ली गई। प्रशिक्षण के उपरांत दिनांक 01.12.2025 को प्रशिक्षणार्थियों का पर-परिक्षण लिया गया।

पाठ्यक्रम का समापन समारोह सरस्वती माँ की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर दिनांक 02.12.2025 को डॉ. मीनाक्षी दुबे, विभागाध्यक्ष, पूर्वोत्तर शिक्षण सामग्री निर्माण विभाग की अध्यक्षता में किया गया।

कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनामिका गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर, नवीकरण एवं भाषा प्रसार विभाग द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान द्वारा किया गया।

शैक्षिक एवं सांस्कृतिक भ्रमण

सत्र 2025–26 में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के द्वारा आयोजित एक शैक्षिक एवं सांस्कृतिक भ्रमण में संस्थान में अध्यनरत कुल 99 विदेशी विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। यात्रा 21 नवम्बर 2025 को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस भ्रमण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय धर्म एवं आस्था से संबंधित ज्ञान और उसकी परंपरा, भारतीय इतिहास, संस्कृति, स्थापत्य कला तथा स्थानीय परिवेश का प्रत्यक्ष अनुभव कराना था, जिससे उनकी हिंदी भाषा-शिक्षा प्रक्रिया और अधिक प्रभावी एवं अनुभवात्मक हो सके।

इस भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने फतेहपुर सीकरी के ऐतिहासिक स्थलों का अवलोकन किया और भारतीय संस्कृति का समीप से अनुभव किया तथा वृंदावन के प्रेम मंदिर के दर्शन से भारतीय धार्मिक जीवंतता का भी अनुभव किया।

'भावक' का नवीन अंक प्रकाशित

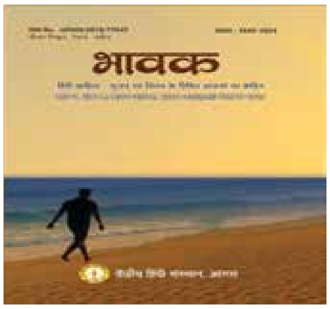

केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा से त्रैमासिक पत्रिका 'भावक' के ताजा प्रकाशित अंक 7 खंड 4 में हिंदी साहित्य की विविध विधाओं को सम्मिलित करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृति आदि के 19 आलेखों का चयन कर प्रकाशित किया गया। इस अंक का संपादन प्रो. सपना गुप्ता द्वारा किया गया।

भारतीय भाषाओं की कार्यशालाएँ आयोजित

निमाड़ी लोक साहित्य की सामग्री का चयन, संकलन एवं अनुवाद करने हेतु द्वितीय कार्यशाला दिनांक 03.11.2025 से 05.11.2025 तक अपने कार्य क्षेत्र लघु कथा शोध केंद्र महेश्वर (मध्य प्रदेश) में निम्नलिखित विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई है। इस कार्यशाला में श्री विजय जोशी 'शितांशु (भाषा संपादक), श्री हरीश दुबे, साहित्यकार एवं गीतकार (मध्य प्रदेश) हिंदी संपादक, श्री जगदीश जोशीला, भाषाविद्, श्रीमती मनीषा शास्त्री, माहेश्वर निमाड़ी लोकगीत गायिका, श्रीमती रजनी उपाध्याय, खरगोन, निमाड़ी गीत गायिका सदस्यों ने भाग लिया।

सिक्किम राज्य के कक्षा 1 एवं 2 तक की पाठ्य-पुस्तक नई शिक्षा नीति (2020 निर्माण) संबंधी कार्यशाला दिनांक 10.11.2025 से 14.11.2025 तक केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा, मुख्यालय में आयोजित की गयी। इस कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में निदेशक महोदय डॉ. सुनील बाबुराव कुळकर्णी देशगव्हाणकर, ने कक्षा 1 एवं कक्षा 2 तक की निर्माणाधीन पाठ्य-पुस्तकों अक्षरांजलि में विषय-सामग्री के चयन के साथ-साथ शब्द त्रुटि में संशोधन तथा पाठ्य सामग्री निर्माण कक्षानुसार तैयार करने पर विशेष बल दिया।

विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे के संयोजन में डॉ. छुकी लेप्चा, हिंदी समन्वयक भाषाएँ, शिक्षा विभाग, डॉ. सोनाम ओंगम् भूटिया, हिंदी पी.जी.टी., भाषाएँ, शिक्षा विभाग, श्रीमती शोभा शर्मा, डी.ई.ओ. (टेक्निकल एसिस्टेंट) भाषा प्रशाखा, शिक्षा विभाग, एवं हिंदी विशेषज्ञ डॉ. शौर्यजीत सिंह, प्राध्यापक, आर. बी. एस. कॉलेज आगरा, समयबद्ध समय पर इस कार्य को संपन्न किया गया। समापन सत्र में प्रो. हरिशंकर, शैक्षिक समन्वयक ने अपने संबोधन में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के अंतर्गत तैयार पुस्तक सामग्री को छात्रोपयोगी तथा हिंदी भाषा के प्रति राष्ट्रीय धारा से जुड़ने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। इस अवसर पर डॉ. सपना गुप्ता नवीकरण भाषा प्रसार विभाग, डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग, उपस्थिति सराहनीय रही। कार्यशाला सहभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

हिंदी-मराठी मुहावरा लोकोक्ति कोश निर्माण संबंधी तृतीय कार्यशाला दिनांक 17.11.2025 से 20.11.2025 तक आगरा (मुख्यालय) में निम्नलिखित विषय विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई। इस कार्यशाला में डॉ. पुरुषोत्तम कुंदे (हिंदी विशेषज्ञ), डॉ महेंद्र बालासाहेब ठाकूरदास, (मराठी विशेषज्ञ) गंगा शिल्प, निरंजन सोसायटी, कात्रज, पुणे, महाराष्ट्र, डॉ. संतोष धोत्रे, पुणे, महाराष्ट्र, प्रो.डॉ. पृथ्वीराज तौर (मराठी विशेषज्ञ) नांदेड़, महाराष्ट्र, प्रो.डॉ. विशाला शर्मा (हिंदी विशेषज्ञ) औरंगाबाद (छत्रपति संभाजी नगर), डॉ. पुरुषोत्तम पाटिल, अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग ने कार्यशाला में भाग लिया। इस कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में निदेशक महोदय डॉ. सुनील बाबुराव कुळकर्णी देशगव्हाणकर, हिंदी-मराठी मुहावरा लोकोक्ति कोश निर्माण की आवश्यकता तथा लोक में संचरित बिखरी हुई अवधारणाओं को संयोजने में कोश की अहम भूमिका संबंधी विषय पर चर्चा की। समापन सत्र के अवसर पर प्रो. हरिशंकर शैक्षिक समन्वयक, डॉ. सपना गुप्ता नवीकरण भाषा प्रसार विभाग, डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग, उपस्थित रहे। विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे के संयोजन में कार्यशाला संपन्न की गई। कार्यशाला में सहभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

हिंदी-बघेली अध्येता कोश निर्माण संबंधी प्रथम कार्यशाला दिनांक 25.11.2025 से 28.11.2025 तक केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (मुख्यालय) में निम्नलिखित विषय विशेषज्ञों के साथ आयोजित की गई इस कार्यशाला में डॉ. श्रीनिवास शुक्ल सरस, सीधी, म.प्र. (संयोजक), श्री राजबहोर पाठक, मनोज पतुलखी, सीधी, म.प., श्री ब्रजमोहन योगी ब्रजेश, सीधी, श्री रमाकान्त द्विवेदी सावन, बमुरी म.प्र., श्री. अंजनी सिंह सौरभ, सीधी, म.प्र., ने भाग लिया।

इस कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में निदेशक महोदय डॉ. सुनील बाबुराव कुळकर्णी देशगव्हाणकर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के अंतर्गत मातृभाषा ओं के संरक्षण तथा पठन पठित का विषय आधरित विषयों में हिंदी-बघेली कोश की उपदेयता तथा महत्व पर प्रकाश डाला।

समापन सत्र के अवसर पर प्रो. हरिशंकर शैक्षिक समन्वयक, डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी, विभागाध्यक्ष, अनुसंधान एवं भाषा विकास विभाग, उपस्थित रहे। विभागाध्यक्ष डॉ. मीनाक्षी दुबे के संयोजन में कार्यशाला संपन्न की गई। कार्यशाला में सहभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

संपादकीय

राष्ट्रीय चेतना का अमर स्वर : 'वंदे मातरम्'

प्रिय पाठकों,

भारत का सांस्कृतिक इतिहास जितना विस्तृत है, उसकी राष्ट्रीय चेतना उतनी ही गहरी और संवेदनशील है। यह चेतना केवल राजनैतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा तक सीमित नहीं, बल्कि उस जीवन-दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें देशभक्ति, समरसता, समर्पण और कर्तव्य का भाव निहित है। इन्हीं राष्ट्रीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करने वाला भारत का अमर राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" हमारे लिए केवल एक काव्यात्मक रचना नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान का उदात्त प्रतीक है।

7 नवंबर 2025 का दिन भारतीय इतिहास के लिए एक भावपूर्ण स्मृति का क्षण बन गया, जब प्रधानमंत्री ने राष्ट्रगीत 'वंदे मातरम्' के 150 वर्ष पूर्ण होने पर वर्षभर चलने वाले राष्ट्रीय समारोहों का उद्घाटन किया। इस मंथन रथ का प्रबुद्ध सारथी केंद्रीय हिंदी संस्थान स्वयं भी रहा। मुख्यालय के साथ-साथ सभी क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा सामूहिक गायन के माध्यम से इस सांस्कृतिक यज्ञ में सहभागिता की गई।

डेढ़ शताब्दी पूर्व, 7 नवंबर 1875 को अक्षय नवमी के दिन बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय की लेखनी से निकला यह गीत आनंद मठ का हिस्सा था। कौन सोच सकता था कि एक साहित्यिक रचना का छोटा सा भाग आने वाले वर्षों में भारत के स्वाधीनता-संग्राम की आत्मा बन जाएगा और फिर स्वतंत्र राष्ट्र के सांस्कृतिक ध्वजवाहक की भूमिका निभाएगा?

बंकिम की कृति को जब रवींद्रनाथ टैगोर ने स्वर दिया, तो यह गीत पुस्तक के पन्नों से निकलकर जन-मन की स्पंदन-रेखा बन गया। इसकी छवि केवल सौंदर्य और प्रकृति-वंदना तक सीमित नहीं रही—यह त्याग, शौर्य और राष्ट्रनिष्ठा की जीवंत ध्वनि बन गया, जिसने एक समूचे समाज को औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध खड़ा होने की प्रेरणा दी। 1896 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में टैगोर द्वारा गाया गया संस्करण उस राष्ट्रीय भावधारा का प्रारंभिक उदय है, जिसकी परिणति 1937 में इसके पहले दो पदों को कांग्रेस द्वारा राष्ट्रगीत का दर्जा मिलने में हुई।

स्वतंत्र भारत के निर्माण के समय संविधान-सभा में राष्ट्रगान के प्रश्न पर विस्तृत विमर्श हुआ। अंततः 24 जनवरी 1950 को डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने यह स्पष्ट किया कि 'जन गण मन' राष्ट्रीय गान होगा, किंतु वंदे मातरम् को स्वतंत्रता आंदोलन में निभाई गई उसकी ऐतिहासिक भूमिका के कारण वही सम्मान प्रदान किया जाएगा, जो किसी राष्ट्र-चिह्न को प्राप्त होता है। आज भले ही संविधान में 'राष्ट्रीय गीत' शब्द नहीं दिखाई देता, पर नैतिकता के स्तर पर यह गीत देशवासियों की संवेदनशील स्मृतियों में उतना ही प्रतिष्ठित है, जितना कि राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गान स्वयं।

यह भी उल्लेखनीय है कि वंदे मातरम् के प्रति जनता की निष्ठा केवल भावनाओं का परिणाम नहीं थी बल्कि यह औपनिवेशिक दमन के विरुद्ध एक सक्रिय और सशक्त राजनीतिक घोषणा भी थी। बंगाल विभाजन के समय 1905 में जब कलकत्ता की सड़कों पर विद्यार्थी जुलूसों में इसे पहली बार नारे के रूप में गा रहे थे, तब अंग्रेजी शासन ने पहली बार इसकी शक्ति को पहचाना। टाउन हॉल में लगभग 40,000 लोगों का एक साथ वंदे मातरम् का गान करना मात्र एक विरोध नहीं था, बल्कि यह एक पूरी पीढ़ी के मन में जागती स्वाधीनता की चेतना का उद्घोष था। इसलिए आश्चर्य नहीं कि लॉर्ड कर्जन ने इसके सार्वजनिक गायन पर प्रतिबंध लगा दिया—क्योंकि यह गीत स्वयं में इतनी ऊर्जा रखता था कि जनता, चाहे अनसुनी क्यों न की जाए, फिर भी एक स्वर में उठ खड़ी होती थी।

इसी दौर में बंदे मातरम् संप्रदाय और अंग्रेजी दैनिक Bande Mataram जैसे उपक्रम आरंभ हुए, जिनके पीछे बिपिन चंद्र पाल और श्री अरविंद जैसी विभूतियों का मार्गदर्शन था। श्री अरविंद ने तो इसे एक प्रकार की आध्यात्मिक साधना का दर्जा दिया और माना कि इसका उच्चारण समाज की सामूहिक चेतना को जागृत करता है। यह विचार उस युग की सांस्कृतिक–राजनीतिक चेतना का संकेत है जहाँ राष्ट्रवाद केवल राजनैतिक अभिलाषा नहीं, बल्कि एक पवित्र नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य था।

वंदे मातरम् की ध्वनि केवल भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं रही। स्टटगार्ट में भी काजी कामा द्वारा फहराए गए भारत के पहले तिरंगे पर अंकित यही गीत था, जबकि इंग्लैंड की जेल में फाँसी के क्षण तक पहुँच चुके मदन लाल ढींगरा के अंतिम शब्द भी "बंदे मातरम्" ही रहे। पेरिस, जिनेवा और केप टाउन तक इस गीत की गूँज सुनाई देती रही, जो भारतीय स्वतंत्रता के वैश्विक प्रसार का प्रमाण है। दक्षिण भारतीय प्रदेशों में भी 1938 का गुलबर्गा छात्र आंदोलन इस तथ्य को सिद्ध करता है कि यह गीत किसी एक क्षेत्र या समय का नहीं, बल्कि भारतीय अस्मिता का शाश्वत प्रतीक है।

वंदे मातरम् आज भी भारत के हृदय की वह अनश्वर ध्वनि है, जो हमें स्मरण कराती है कि राष्ट्र के प्रति सम्मान केवल शब्दों से नहीं, बल्कि कर्म, उत्तरदायित्व और जागरूक नागरिकता से प्रकट होता है। हमें गर्व है कि केंद्रीय हिंदी संस्थान भी इस भव्य समारोह यज्ञ का साक्षी रहा। इस सांस्कृतिक समारोहों का वर्ष केवल अतीत का उत्सव नहीं, बल्कि भविष्य की तैयारी है उस भविष्य की, जहाँ यह गीत हमारी एकता, संवेदना और राष्ट्रीय संकल्प का प्रेरक आधार बना रहे। 150 वर्षों की यह यात्रा भारतीय राष्ट्रवाद की उस अविरल धारा का स्मरण भी है, जो समय-समय पर बदलते रूपों में उभरती रही है, परंतु जिसका मूल भाव सदैव एक ही रहा—मातृभूमि सर्वोपरि।

निदेशक

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी 'देशगव्हाणकर'

शिक्षक प्रशिक्षार्थियों के लिए शोध परियोजना कार्यक्रम

अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा संचालित हिंदी शिक्षण पारंगत (तृतीय सेमेस्टर) पाठ्यक्रम (बी. एड. समकक्ष) के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के लिए विद्यालय शिक्षणाभ्यास कार्यक्रम (विद्यालय अनुभव कार्यक्रम) के अंतर्गत विद्यालय आधारित शोध परियोजना कार्यक्रम का आयोजन विभाग के शिक्षक मार्गदर्शकों के द्वारा किया गया। शोध परियोजना से संबंधित आँकड़ा संकलन एवं विश्लेषण के लिए सभी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को मार्गदर्शकों के निर्देशन में 04 नवंबर तक स्टुअर्ट वार्ड मेमोरियल उ.मा. विद्यालय सिकंदरा, कम्पोजिट स्कूल नगला सोहनलाल, ब्लॉक बिचपुरी एवं महाकवि सूर स्मारक इंटर कॉलेज, सूरकुटी रुनकता, आगरा, ले जाया गया।

नाटक प्रस्तुति में मिला तृतीय स्थान

वन बंधु परिषद (फ्रेंड्स ऑफ ट्राइबल सोसाइटी) आगरा चैप्टर के वार्षिक उत्सव में अध्यापक शिक्षा विभाग के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने "त्रासदीः हम कौन है?" विषय पर सूर सदन प्रेक्षागृह में संस्थान की ओर से नाटक प्रस्तुत किया। इस नाटक में केंद्रीय हिंदी संस्थान को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

समुदाय संलग्नता एवं सेवा कार्यक्रम

हिंदी शिक्षण पारंगत (तृतीय सेमेस्टर) के शिक्षक-प्रशिक्षुओं हेतु 06 नवम्बर, 2025 से 15 नवम्बर, 2025 तक समुदाय संलग्नता एवं सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

यह दस दिवसीय कार्यक्रम विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व, नागरिक चेतना, डिजिटल एवं वित्तीय साक्षरता, पर्यावरणीय संवेदनशीलता तथा सामुदायिक सहभागिता की भावना विकसित करने के लिए किया गया।

इस दस दिवसीय कार्यक्रम के प्रथम दिन, 06 नवंबर को अभिमुखीकरण कार्यक्रम प्रो. चंद्रकांत कोठे, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, डॉ. राजश्री, कार्यक्रम संयोजक एवं डॉ. भास्कर ठुबे, सहसंयोजक द्वारा किया गया।

दूसरे दिन 07 नवम्बर को पर्यावरण स्वच्छता, संरक्षण एवं श्रमदान के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से इंडिया राइजिंग गैर-सरकारी संस्था के पदाधिकारियों ने पर्यावरण संरक्षण, कचरा प्रबंधन तथा सामुदायिक स्वच्छता पर सारगर्भित परिचर्चा की गयी।

तीसरे दिन, 08 नवंबर को शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने समुदाय का प्रत्यक्षीकरण एवं समस्याओं के अवलोकन हेतु ग्राम पंचायत रुनकता एवं वहाँ स्थित प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक विद्यालयों का ग्राम प्रधान तथा प्रधानचार्य, महाकवि सूर स्मारक इंटर कॉलेज सूरकुटी रुनकता के दिशा निर्देशन में भ्रमण किया।

चौथे दिन, 09 नवम्बर को इंडिया राइजिंग संस्था के सहयोग से संस्थान परिसर में स्वच्छता एवं सौन्दर्य-वर्धन हेतु श्रमदान आयोजित किया गया।

पाँचवे दिन, 10 नवम्बर को भारत सरकार मंत्रालय द्वारा आयोजित "नशामुक्ति अभियान" के अंतर्गत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के लिए "एक कदम नशामुक्ति की ओर" विषय पर नवजीवन नशामुक्ति केंद्र द्वारा नशामुक्त भारत अभियान पर विचारोत्तेजक व्याख्यान दिया गया।

छठवें दिन, 11 नवम्बर को शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को जिला पंचायती राज अधिकारी,आगरा ने जिला प्रशासन की संरचना, स्थानीय शासन, नगर निगम एवं पंचायती राज व्यवस्था पर अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी दी। सातवें दिन, 12 नवम्बर को शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को ग्राम मितावली (तहसील एत्मादपुर) ले जाया गया।

आठवे दिन, 13 नवम्बर को ए.सी. पी.आगरा ने महिला सुरक्षा पर, साइबर सेल के उप निरीक्षक एवं उनके सहयोगियों ने साइबर सुरक्षा पर व्याख्यान दिया। एस0एच0ओ0/प्रभारी मिशन शक्ति एवं उनके सहयोगियों ने कानून व्यवस्था एवं सुरक्षा पर जागरूक किया तथा शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से संवाद भी किया।

नवम दिन, 14 नवम्बर को शिक्षक प्रशिक्षणाथियों ने रामलाल वृद्धाश्रम, सिकंदरा का परिभ्रमण किया।

दसवें दिन, 15 नवंबर को शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने संपूर्ण कार्यक्रम पर सामूहिक चर्चा की तथा अपनी गतिविधियों का विस्तृत प्रतिवेदन तैयार किया।

दिल्ली केंद्र

काव्य पाठ तथा निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक 10/11/2025 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों हेतु काव्य पाठ का आयोजन किया गया, जिसमें कक्षा 100 से प्रथम स्थान पर नोबोरू, द्वितीय स्थान पर अयन सेलेमान एवं थलमन तथा तीसरे स्थान पर हुईचान पार्क, कक्षा 200 से प्रथम स्थीन पर आयका, द्वितीय स्थान पर यंगश्याओ हुए तथा तीसरे स्थान पर अना एवलिन हुतडो आए।

दिनांक 11/11/2025 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों हेतु निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कक्षा 100 से नोबोरू, कक्षा 200 से मिकी ताकिजावा तथा कक्षा 300 से रोसा सिनानी, कक्षा 200 से प्रथम स्थान पर ब्यों ग जिन, द्वितीय स्थान पर पन्या3थिप मुअनडनछत्र तथा तीसरे स्थान पर यंग श्यामओ हुए आए।

दिल्ली भ्रमण पर निकले विदेशी छात्र-छात्राएं

दिनांक 28/11/2025 को अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों हेतु दिल्ली भ्रमण का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वप्रथम (1) श्री आद्यकात्यायनी मंदिर (2) अहिंसा स्थल (3) गिरजाघर (4) प्रधानमंत्री संग्रहालय (5) गुरूद्वारा बंगला साहिब तथा (6) दिल्ली हाट का संदर्शन कराया गया। इस अवसर पर केंद्र के शैक्षिक सदस्य, कार्यालय के कुछ कार्मिक तथा विदेशी विद्यार्थी भी उपस्थित थे।

विशेष व्याख्यान

केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र के प्रो. धनजी प्रसाद द्वारा भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय द्वारा ऑनलाइन माध्यम से संचालित 'स्वयं पोर्टल' पर उपलब्ध 'भाषा प्रौद्योगिकी का परिचय' पाठ्यक्रम के अंतर्गत पांडिच्चेरी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा आयोजित 49वीं कार्यशाला में 'भाषा प्रौद्योगिकी के भाषायी और तकनीकी पक्ष' विषय पर, मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) द्वारा दिनांक 28 अक्टूबर से 25 नवंबर, 2025 तक आयोजित गुरु दक्षता (संकाय प्रवेशीय कार्यक्रम) में 03 नवंबर 2025 को 'उच्च शिक्षा की पारिस्थितिकी का भाषायी संदर्भ' विषय पर विशेष व्याख्यान दिया गया।

491वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा तेलंगाना राज्य के गुरुकुल विद्यालय के हिंदी अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए दिनांक 04.11.2025 से 15.11.2025 तक 491वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। जिसका उद्घाटन समारोह दि. 04.11.2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी की अध्यक्षता में संपन्न किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में एमजेपीटीबीसी डब्ल्यूआरईआईएस, मसबटैंक, हैदराबाद के संयुक्त सचिव, डॉ. जी. तिरूपति उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, अतिथि प्रवक्ता एवं डॉ. एस. राधा उपस्थित थीं। इस कार्यक्रम में कुल 57 (महिला-39, पुरुष-18) प्रतिभागियों ने कक्षा में उपस्थित होकर प्रशिक्षण प्राप्त किया।

अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने कहा कि मनुष्य में सीखने की प्रक्रिया गर्भ से ही प्रारंभ हो जाती है। मातृभाषा की अपेक्षा अन्य भाषा को सीखने में सौ गुना ज्यादा प्रयास करना पड़ता है। मनुष्य के भीतर चौंसठ कलाएँ होती हैं। इन कलाओं के माध्यम से ही हम नई-नई भाषाओं का सृजन कर सकते हैं।

मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जी. तिरूपति ने कहा कि बच्चों को सिखाने से पहले हमें सीखना होगा। विषय को रूचिकर बनाकर पढ़ाने से बच्चों में विषय के प्रति रूचि उत्पन्न होती है। हिंदी के ज्ञान को बढ़ाने के लिए उसके शब्दकोश को निरंतर बढ़ाते रहना चाहिए जिससे भाषा में पकड़ मजबूत होती है।

पाठ्यक्रम संयोजक एवं क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक ने कहा कि शिक्षक सच्चे अर्थों में राष्ट्र निर्माता होता है। प्रशिक्षण के दौरान आप यह भूल जाइए कि आप शिक्षक हैं। प्रशिक्षण के दौरान व्याकरण एवं साहित्य से संबंधित जो भी समस्याएँ हैं, वह दूर की जाएँगी। साथ-ही-साथ तकनीकी ज्ञान भी दिया जाएगा।

इस अवसर पर डॉ. दीपेश व्यास ने कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से प्रशिक्षण के दौरान अगर प्रतिभागी अध्यापक शत् प्रतिशत उपस्थित रहेंगे तो निश्चित ही वे इसका लाभ उठा पाएँगे।

इस पाठ्यक्रम का समापन समारोह दि. 15.11.2025 को आयोजित किया गया जिसमें केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अध्यक्षता आभासीय मंच के माध्यम से की। मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय स्टेट बैंक के सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री विनय कुमार सिंह उपस्थित रहे। इस अवसर पर पाठ्यक्रम संयोजक केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, अतिथि प्रवक्ता उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम का संचालन बाल मुरली कृष्णा एवं आभार ज्ञापन के. राजेश्वरी द्वारा किया गया। इस पाठ्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों ने हस्तलिखित पत्रिका "तेलंगाना रत्नावली" की रचना की। समापन समारोह के दौरान अतिथियों द्वारा हस्तलिखित पत्रिका का लोकार्पण किया गया। प्रतिभागियों को अतिथियों के द्वारा प्रमाण पत्र वितरित किए गए। पर-परीक्षण के आधार पर उत्तम अंक प्राप्त छात्रों को विशेष पुरस्कार दिए गए। के. राष्ट्रपाल को प्रथम पुरस्कार, श्याम कुमार को द्वितीय पुरस्कार, के. श्रीकांत को तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। राजेश्वरी के. को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय संविधान दिवस

राष्ट्रीय संविधान दिवस के अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र पर संस्थान के सभी सदस्यों द्वारा भारतीयता की शपथ ली गई। इस अवसर पर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. फत्ताराम नायक ने कहा कि हमारे लिए यह दिन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि 26 नवंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा ने भारत के संविधान को अपनाया था। जो 26 जनवरी, 1950 को पूरे देश में लागू किया गया।

"छायावाद और कुँवर चंद्र प्रकाश सिंह" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के सौजन्य से एवं हिंदी विभाग, प्रागज्योतिष महाविद्यालय, गुवाहाटी, असम के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 06 एवं 07 नवंबर 2025 को 'छायावाद और कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह' विषय पर दो दिवसीय लघु बजटीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रथम दिन 06 नवंबर, 2025 को उदघाटन सत्र के साथ दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत वागेश्वरी प्राचीर पत्रिका के विमोचन से हुई, जिसे कॉटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चंद्र डेका ने लोकार्पित किया। उदघाटन सत्र में मुख्य अतिथि प्रो. रमेश चंद्र डेका, विशिष्ट अतिथि रमेंद्र नारायन कलिता, डॉ. रविप्रकाश सिंह, श्री शशि प्रकाश सिंह डॉ. शिव मोहन सिंह तथा विशेष आमंत्रित वक्ता जगदिंद्र रायचौधुरी उपस्थित रहे।

स्वागत भाषण में डॉ. चंदना शर्मा ने सभी अतिथियों का असमिया परंपरा अनुसार फुलाम गामोछा, स्मारक प्रतीक और पौधा देकर अभिनंदन किया। विशिष्ट अतिथि के रुप में ऑनलाइन माध्यम से जुड़े केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के आदरणीय निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने अपना आशीर्वचन वक्तव्य देते हुए छायावाद एंव कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह पर संगोष्ठी आयोजन हेतु आयोजकों को बधाई दी। उदघाटन सत्र के अध्यक्ष एवं प्रागज्योतिष महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मनोज कुमार महंत ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन के लिए हिंदी विभाग को बधाई दी साथ ही केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा एवं अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति के प्रति आभार प्रकट किया। प्रथम सत्र में डॉ. चंद्रशेखर चौबे, प्रो. सुशील कुमार शर्मा, प्रो. मिलन जमातिया, प्रो. सत्यपाल तिवारी और डॉ. शिव मोहन सिंह ने विचार रखे। डॉ. शिव मोहन ने कहा कि महाकवि कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह छायावाद के अतुलनीय शब्दशिल्पी हैं, जिन्होंने आधुनिक हिंदी काव्यधारा को नई दिशा दी। इस सत्र की अध्यक्षता गौहाटी विश्वविद्यालस के प्रो. दिलीप मेधी ने की और संचालन डॉ. चंदना शर्मा ने किया। द्वितीय सत्र में प्रो. अलका पाण्डेय, डॉ. आशुतोष वर्मा और बृजेश कुमार ने कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह की काव्य साधना, सांस्कृतिक चेतना और छायावाद में योगदान पर अपने शोधपूर्ण वक्तव्य दिए। इस सत्र की अध्यक्षता दैनिक पूर्वोदय के संपादक रवि शंकर रवि ने की, जबकि संचालन और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. प्रीति बैश्य ने किया।

द्वितीय दिन 07 नवंबर, 2025 को तृतीय एवं चतुर्थ सत्रों के साथ समापन समारोह का आयोजन किया गया। तृतीय सत्र में प्रो. दिलीप मेहरा, डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव और डॉ. अरुणा सिंह ने अपने विचार रखे। इस सत्र की अध्यक्षता गौहाटी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. अच्युत शर्मा ने की और संचालन डॉ. प्रीति बैश्य तथा धन्यवाद ज्ञापन सवर्णा बरकाकति ने किया। चतुर्थ सत्र में डॉ. गजेन्द्र सिंह भदौरिया, शोधार्थी कामन सिबोह तथा स्वर्णा बरकाकति और डॉ. चंदना शर्मा ने कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह की रचनाएं, राष्ट्रीय चेतना, श्रंगार रस, मानवतावादी दृष्टिकोण और जनकवि जगनिक नाटक में उनके योगदान पर अपने शोधपूर्ण वक्तव्य दिए।

इस सत्र की अध्यक्षता मिजोरम विश्वविद्यालय के सीनियर प्रो. सुशील कुमार शर्मा ने की तो वहीं इसका संचालन डॉ. बृजेश कुमार ने किया। समापन समारोह का शुभारंभ प्रागज्योतिष महाविद्यालय के छात्रों द्वारा 'सरस्वती वंदना' गाकर की गई। इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. द्वीपेन बेजबरुवा, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. चंद्रशेखर चौबे और शशि प्रकाश सिंह, अध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार महंत, उपाध्यक्ष डॉ. नंदिनी मरल शर्मा तथा डॉ. नमिता दास शामिल हुए।

"कार्यालय में हो राजभाषा हिंदी का यथोचित प्रयोग"

राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र (एनआईसी), मेघालय द्वारा दिनांक 21.11.2025 शुक्रवार को हिंदी कार्यशाला तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र का भ्रमण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस संयुक्त कार्यक्रम का उद्देश्य भारत सरकार की राजभाषा नीतिके प्रभावी क्रियान्वयन को सुदृढ़ करना तथा मेघालय जैसे अहिंदी भाषी राज्य में कार्यरत एनआईसी अधिकारियों की हिंदी में कार्य-दक्षता को बढ़ाना था।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथिएवं मुख्य वक्ता प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग का स्वागत सम्मान श्री संतोष वी. टी., राज्य सूचना अधिकारी (SIO), एनआईसी मेघालय ने की। प्रो. पाण्डेय ने प्रतिभागी एनआईसी अधिकारियों को कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग का प्रशिक्षण दिया। उनके व्याख्यान में प्रमुख विषयों— राजभाषा नीति, कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रभावी उपयोग, भाषा प्रशिक्षण, तथा केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूपण— पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। प्रो. पार्थ सारथी पांडेय ने बहुभाषी कार्य परिवेश में हिंदी के उपयोग को बढ़ाने के लिए सतत अभ्यास तथा संस्थागत सहयोग के महत्व पर बल दिया।

कार्यशाला की अध्यक्षता श्री संतोष वी. टी., राज्य सूचना अधिकारी (SIO), एनआईसी मेघालय ने की। कार्यक्रम का समन्वयन ओएलआईसी सदस्यों —श्री देबोज्योति कर, श्रीमती रोज़मेरी मैसनाम, तथा श्रीमती केन्यिर ओल्गा जे. नोंग्रुम न्गोंमदिर द्वारा किया गया। कार्यशाला में एनआईसी मुख्यालय एवं जिला केंद्रों सेशत प्रतिशत उपस्थिति रही, जिसमें अधिकारी एवं कर्मचारी दोनों प्रत्यक्ष तथा वर्चुअल माध्यम से शामिल हुए।

संयुक्त कार्यशाला एवं शैक्षणिक भ्रमण अत्यंत सफल रहा, जिसने अधिकारियों में हिंदी के प्रति जागरूकता, व्यावहारिक ज्ञान और आधिकारिक कार्यों में हिंदी के अधिक प्रभावी उपयोग हेतु नई प्रेरणा प्रदान की। दोनों कार्यक्रम भारत सरकार के उस व्यापक दृष्टिकोण के अनुरूप रहे, जिसके अंतर्गत प्रशासनिक कार्यप्रणाली में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देना तथा भारत की भाषाई विरासत को सुदृढ़ करना शामिल है।

लेखकों की भाँति व्यापक हो शिक्षकों का दृष्टिकोण

मिज़ोरम हिंदी ट्रेनिंग कॉलेज, आइज़ोल में 14 नवंबर 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र (मुख्यालय—आगरा) के संयुक्त तत्वावधान में "पूर्वोत्तर भारत में हिंदी शिक्षण : चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ" विषय पर एक-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिलांग केंद्र, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. दिनेश कुमार चौबे, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय तथा प्रो. संजय कुमार, अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय आमंत्रित थे। इस अवसर पर कॉलेज की प्राचार्या डॉ. जूडी ललएङवारी ने मुख्य अतिथि प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय, विशिष्ट अतिथि प्रो. दिनेश कुमार चौबे एवं प्रो. संजय कुमारका स्वागत-अभिनंदन पुष्प-गुच्छ एवं अंगवस्त्र देकर किया।

संगोष्ठी के समन्वयक एवं मिज़ोरम हिंदी ट्रेनिंग कॉलेज के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. ललमुआनओमा साइलो ने स्वागत उद्बोधन में हिंदी शिक्षा के विस्तार हेतु इस आयोजन की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। बीज-वक्तव्य मिज़ोरम विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. अश्वेष वर्मा ने प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि प्रो. पार्थ सारथी पाण्डेय ने अपने विस्तृत भाषण में हिंदी शिक्षण की चुनौतियों तथा भविष्य की संभावनाओं पर सारगर्भित विचार व्यक्त किए। उन्होंने मेघालय, मिजोरम एवं त्रिपुरा के सुदूर क्षेत्रों में हिंदी शिक्षकों के प्रशिक्षण से प्राप्त अपने अनुभवों को व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि हिंदी जन-गण की भाषा है तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र में हिंदी को लोग सहर्ष स्वीकार कर रहे हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हिंदी के प्रयोग में वृद्धि में स्थानीय हिंदी शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण है। विशिष्ट अतिथि प्रो. डी.के. चौबे ने पूर्वोत्तर भारत में हिंदी की बढ़ती स्वीकृति और इसके भविष्य की दिशा पर अपने महत्वपूर्ण विचार साझा किए। विशिष्ट अतिथि प्रो. संजय कुमार ने मिज़ोरम के संदर्भ में हिंदी शिक्षण की चुनौतियों एवं संभावनाओं पर चर्चा की। प्राचार्या डॉ. जूडी ललएङवारी ने अध्यक्षीय भाषण देते हुए संगोष्ठी की सार्थकता पर जोर दिया। उद्घाटन सत्र के अंत में डॉ. मरीना ललथ्लामुआनी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया तथा कार्यक्रम का संचालन डॉ. अजय कुमार रंजीत द्वारा किया गया।

उद्घाटन समारोह के पश्चात प्रथम तकनीकी सत्र आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता मिज़ोरम विश्वविद्यालय के वरिष्ठ आचार्य प्रो. संजय कुमार ने की। इस सत्र में डॉ. कंचन वर्मा (लेडी श्रीराम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय), जे.पी. पाण्डेय (IRPS, संघ लोक सेवा आयोग), डॉ. श्वेता द्विवेदी (शिक्षा विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय), डॉ. सुषमा कुमारी (हिंदी विभाग, मिज़ोरम विश्वविद्यालय) तथा डॉ. ललिरनकिमी (गवर्नमेंट आइज़ोल कॉलेज) ने अपने-अपने शोध-विषयों पर महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। सत्र के अंत में प्रो. संजय कुमार ने अध्यक्षीय टिप्पणी प्रस्तुत की तथा डॉ. वानललपारी चिनज़ा, असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, MHTC ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

298वें नवीकरण का समापन समारोह

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के मैसूर केंद्र द्वारा केरल राज्य के मलप्पुरम जिले के माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के लिए दिनाँक 24.10.2025 से 07.11.2025 तक आयोजित 298वें हिंदी शिक्षक नवीकरण पाठ्यक्रम के समापन समारोह का आयोजन दिनाँक 07.11.2025 को सम्पन्न हुआ। इस दौरान केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रणजीत भारती, एवं शैक्षिक सदस्य, डॉ. योगेंद्र कुमार मिश्र ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए एवं प्रतिभागियो को धन्यवाद दिया। इस दौरान कार्यक्रम के सहभागी शिक्षकों द्वारा तैयार की गई हस्तलिखित पत्रिका 'मलप्पुरम गरिमा' विमोचन किया गया। जिसके अंतर्गत मलप्पुरम जिले के दार्शनिक स्थल, पर्यटन स्थल, संस्कृति प्रसिद्ध व्यक्तियों पर केंद्रीत आलेख लिखे गए। तत्पश्चात प्रतिभागियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। कार्यक्रम का संचालन महिला प्रतिभागी श्रीमती गिरिजा टी एम ने किया। अंत में प्रतिभागी श्री विनोद द्वारा मैसूर केंद्र के सभी शिक्षकों, प्रतिभागियों आदि का धन्यवाद ग्यापन किया गया। पाठ्यक्रम के दौरान दिनांक 04.11.2025 को शैक्षिक भ्रमण का आयोजन भी किया गया। जिसके अंतर्गत मलप्पुरम जिले में स्थित कलकुंडी बर्ड सेंचुरी, तुंचनपरंब, तिरुर जो मलयालम साहित्य के पिता 'तुंचत रामानुजन एषुत्तचन'की स्मृति में बना सांस्कृतिक स्थल है का भ्रमण किया गया। इसके अलावा तुंचत्तेषुच्चत्तनमलयालम विश्वविद्यालयएवं शाम के वक्त उन्नियालुंगन बीच का भ्रमण किया गया।

डॉ. रणजीत भारती, क्षेत्रीय निदेशक, मैसूर केंद्र ने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र द्वारा 'भारतीय भाषा परिवार : अधुनातन आयाम' विषय पर दिनांक 24.11.2025 से 29.11.2025 तक आयोजित संकाय संवर्धन कार्यक्रम में ऑफलाइन सहभागिता की।

हिंदी शिक्षकों के लिए आयोजित नवीकरण पाठ्यक्रम

157 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के क्षेत्रीय केंद्र भुवनेश्वर द्वारा ओड़िशा राज्य के मयूरभंज जिले के राइरंगपुर क्षेत्र के हिंदी शिक्षकों के लिए दि. 28.10.2025 से 08.11.2025 तक 157 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम सरकारी बालिका उच्च विद्यालय, राइरंगपुर में आयोजित किया गया। इसमें कुल 65 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। उद्‌घाटन समारोह में अध्यक्ष के रूप में संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक एवं पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. रंजन कुमार दास तथा मुख्य अतिथि के रूप में जिला विज्ञान पर्यवेक्षक मयूरभंज, एवं सम्मानित मंचासीन अतिथि

डॉ. अरविन्द तिवारी (अतिथि प्रवक्ता, अनु.) उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला। क्षे.नि. डॉ. रंजन कुमार दास ने पाठ्यक्रम व संस्थान का परिचय देते हुए अध्यक्षीय टिप्पणी प्रस्तुत की। (दिनांक 08.11.2025 को समापन समारोह की अध्यक्षता क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रंजन कुमारदास ने की। मुख्य अतिथि के रूप में जिला विज्ञान पर्यवेक्षक, मयूरभंज एवं अन्य सम्मानित मंचासीन अतिथि डॉ. अरविंद तिवारी (अतिथि प्रवक्ता, अनु.) उपस्थित रहे।)

मंच संचालन चक्रधर मल्लिक, हिंदी शिक्षक द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन ब्रह्मा पद पाण्डा, हिंदी शिक्षक द्वारा किया गया।

158 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के क्षेत्रीय केंद्र भुवनेश्वर द्वारा ओड़िशा राज्य के नयागड़ जिले के हिंदी शिक्षकों के लिए दि. 11.11.2025 से 21.11.2025 तक 158 वाँ नवीकरण पाठ्यक्रम पी.एम. श्री ब्रजेंद्र उच्च विद्यालय, नयागड़ में आयोजित किया गया।

इसमें कुल 63 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। उद्‌घाटन समारोह की अध्यक्षता केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक एवं पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. रंजन कुमार दास ने की। मुख्य अतिथि के रूप में सहायक जिला शिक्षा अधिकारी, नयागड़ उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ने अपने उद्बोधन में हिंदी भाषा के महत्व पर प्रकाश डाला।

क्षे.नि. डॉ. रंजन कुमार दास ने पाठ्यक्रम व संस्थान का परिचय देते हुए अध्यक्षीय टिप्पणी प्रस्तुत की। दिनांक 21.11.2025 को समापन समारोह की अध्यक्षता क्षेत्रीय निदेशक डॉ. रंजन कुमार दास ने की। मुख्य अतिथि के रूप में जिला विज्ञान पर्यवेक्षक, नयागड़, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रधानाध्यापक (पी.एम. श्री ब्रजेंद्र उच्च विद्यालय, नयागड़), अतिथि प्रवक्ता डॉ. चंद्र प्रताप सिंह (विषय विशेषज्ञ) उपस्थित रहे।

अध्यापन कार्य डॉ. रंजन कुमार दास, डॉ. चंद्र प्रताप सिंह एवं द्वारा किया गया। मंच का संचालन शरत चंद्र आचार्य, हिंदी शिक्षक द्वारा किया गया एवं धन्यवाद ज्ञापन सुरेश चंद्र बराड़, हिंदी शिक्षक द्वारा किया गया।

पत्रिका का विमोचन

दिनांक 21.11.2025 को आयोजित समापन सत्र में नयागड़ जिले के हिंदी शिक्षकों द्वारा लिखित पत्रिका 'नयागड़ एक विश्लेषण' का विमोचन समापन समारोह में मंच पर बैठे अतिथियों/विद्वानों द्वारा किया गया। पत्रिका की 2 प्रतियों में से एक प्रति जिला शिक्षा अधिकारी, नयागड़ के कार्यालय हेतु तथा मूल प्रति केंद्रीय हिंदी संस्थान, भुवनेश्वर केंद्र हेतु हिंदी शिक्षकों द्वारा प्रदान किया गया।

शब्दवार्ता

वंदे

हमारे राष्ट्रगीत का प्रथम शब्द है 'वंदे'। यह शब्द 'वंद्' धातु से बना है जिसका शब्द प्रयोग वंदन है। 'वंदन' शब्द अर्थ है नमस्कार करना, स्तुति करना। व्याकरणिक दृष्टि से 'वन्द् + ल्युट्' प्रत्यय से बना 'वंदन' संज्ञा रूप में प्रयुक्त होता है और यह क्रिया के भाव को व्यक्त करता है। अर्थ की दृष्टि से इसमें मानसिक श्रद्धा, भावनात्मक सम्मान और आत्मिक स्वीकार की भावना भी निहित है। साहित्य और संस्कृति में 'वंदन' शब्द का प्रयोग देवताओं, गुरुओं, मातृभूमि, प्रकृति और आदर्श मूल्यों के प्रति आदर व्यक्त करने के लिए व्यापक रूप से किया गया है, जैसे- 'गुरु वंदन', 'मातृभूमि वंदन', 'वंदे मातरम्'।

जनजातीय गौरव दिवस

दिनांक 15.11.2025 को जनजाति विकास समिति, नागालैंड एवं जेलियांगरोंग हेराका युवा मंच द्वारा आयोजित जनजातीय गौरव दिवस पर दीमापुर स्थित संस्थान के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. थुन्बुई को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। भगवान बिरसा मुंडा की जन्म तिथि 15 नवंबर, 1875 को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने का आयोजन भारत सरकार द्वारा सन् 2021 में आरंभ किया गया था।

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. थुन्बुई ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जनजातीय नेताओं के योगदान तथा

उनके बलिदान की कथा को देश के सभी समुदायों तक पहुँचाने के लिए जनजातीय गौरव दिवस मनाया जाता है।

उन्होंने बताया कि अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई के अतिरिक्त इस महापुरुष ने सामाजिक सुधार तथा आध्यात्मिक शिक्षाओं के माध्यम से भी मुंडा समाज का मार्गदर्शन किया, जिसके कारण उन्हें भगवान बिरसा के नाम से भी जाना जाता है। बिरसा मुंडा की जीवनी के साथ-साथ वक्ता ने रानी गाइदिन्ल्यू एवं हाइपौ जादोनांग जैसे पूर्वोत्तर भारत के भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन पर भी प्रकाश डाला।

प्रकाशन विभाग

संस्थान प्रकाशनों की बिक्री से संबंधित भुगतान को ऑनलाइन स्वीकार करने की सुविधा उपलब्ध है इसके लिए पृथक से खाता खोला गया है। क्यू आर कोड के माध्यम से भी भुगतान किया जा सकता है। खाता विवरण इस प्रकार है-

Account Holder's Name:
THE KENDRIYA
HINDI SHIKSHANA MANDAL AGRA
Account Number : 42583260224
IFSC : SBIN0017686
MICR : 282002047
Branch : KHANDARI CROSSING AGRA

नोट: 1. संस्थान की प्रकाशन सूची संस्थान वेबसाईट www.hindisansthan.in पर उपलब्ध है।
2. सूची में से चयनित पुस्तकों का क्रयादेश ई-मेल publicationmanagerkhs@gmail.com पर भेजा जा सकता है।

Merchant Name :
THE KENDRIYA HINDI SHIKHSA-NA MANDAL
UPI ID : thekhsmagra@sbi

पृष्ठ 1 का शेष

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे प्रो. चक्रधर ने अपने संबोधन में कहा कि "हिंदी एक नहीं है, अनेक है- मराठी-हिंदी, असमिया-हिंदी, अतः हिंदी व्यापक है। हिंदी में यह समन्वय होना अनिवार्य है। हमें अपनी लिपि की रक्षा करनी चाहिए और इसमें हमें ए.आई. की यथोचित सहायता लेनी चाहिए।

उन्होंने यह आग्रह भी प्रस्तुत किया कि केंद्रीय हिन्दी संस्थान हमारे भाषाई प्रयोग का डाटा एकत्र करके स्वयं का ए.आई केंद्र बनाए, फिर हमें विदेशी ए.आई की आवश्यकता नहीं होगी। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. एम.जे. वारसी ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत भाषा के क्षेत्र में सबसे धनी है। संसार में भारतीय भाषा चिंतन एवं विचारधारा पारंपरिक है। वेदों में शिक्षा, व्याकरण, छंद आदि का ज्ञान आवश्यक माना गया है जिसका मूल आधार भाषा-विज्ञान है। "शैक्षिक प्रो. हरिशंकर ने कार्यक्रम को अपना सानिध्य प्रदान करते हुए कहा कि भारतीय भाषाविज्ञान, अन्य भाषा विज्ञानों से भिन्न है। भाषाविज्ञान के विभिन्न क्षेत्र भारतीय भाषाविज्ञान से किस प्रकार भिन्न है, आदि विषयों पर भी विचार करने की आवश्यकता है।"

उद्‌घाटन सत्र के पश्चात प्रथम अकादमिक परिचर्चा सत्र की अध्यक्षता प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल ने की तथा विशेषज्ञ वक्ता प्रो. रामसुधार सिंह, प्रो. गिरीशनाथ झा तथा सत्र संचालक श्री अनुपम श्रीवास्तव रहे। तत्पश्चात समानांतर प्रथम अकादमिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल ने की तथा डॉ. अरिमर्दन त्रिपाठी सान्निध्य में रहे। इस सत्र में चार पत्र वाचकों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

द्वितीय समानांतर अकादमिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. जवाहर क्नावत ने की तथा आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. गोपाल मौजूद रहे। इस सत्र में 6 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

दिनांक 09 नवंबर को पूर्वाह्न समानान्तर तृतीय अकादमिक सत्र की अध्यक्षता डॉ. अरूप कुमार नाथ ने की। आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. गोपाल राम मौजूद थे। समानांतर चतुर्थ अकादमिक सत्र की अध्यक्षता प्रो. रामसुधार सिंह ने की। आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. अर्पणा झा उपस्थित रहीं।

प्रो. मनीष जोशी ने किया मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र का उद्घाटन

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के यूजीसी - मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र (एमएमटीटीसी) का शुभारंभ समारोह एवं दिनांक 24-11-2025 से 29-11-2025 तक 'भारतीय भाषा परिवारः अधुनातन आयाम' विषय पर आयोजित छह दिवसीय लघु अवधि कार्यक्रम/ संकाय संवर्धन कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह दिनांक 24-11-2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के अटल बिहारी वाजपेयी अंतरराष्ट्रीय सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आरंभ मंचासीन अतिथियों के द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन द्वारा किया गया। इस दौरान सरस्वती वंदना, संस्थान गीत एवं वंदे मातरम गीत गायन किया गया। तत्पश्चात मंचासीन अतिथियों का स्वागत उत्तरीय एवं स्मृति चिन्ह द्वारा किया गया। उसके बाद केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के कुलसचिव और सहायक निदेशक डॉ. अंकुश औंधकर ने मंचासीन अतिथियों का परिचय कराया।

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा द्वारा स्वागत भाषण में कहा कि यह संस्थान के लिए ऐतिहासिक क्षण और बहुत ही बड़ी उपलब्धि है। विश्वविद्यालय बनने के क्रम में यह एक महत्वपूर्ण पहल है जो देश भर के शिक्षकों को जोड़ेगा। उन्होंने केंद्रीय हिंदी संस्थान के इतिहास और गतिविधियों से परिचय कराया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित श्री युवराज मलिक, निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली ने अपने वक्तव्य में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मूल तत्वों की बात की। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पाँच आई द्वारा समझी जा सकती है- इंडिया, इंटरनेशनल, इन्क्लूसिव, इंटरैक्टिव, इंपैक्टफुल। भारत की परंपरा गुरुओं की है। हमें गुरु की आस्था और विचार को जागृत करना होगा। उन्होंने कहा कि प्रतिदिन 10 पेज पढ़ना, 01 पेज लिखना, 01 पेज बोलना के फार्मूला का पालन करना विचार और अभिव्यक्ति को मजबूत करता है। गीता कर्तव्य बोध कराती है। निरंतर पढ़ते रहना शिक्षक का कर्तव्य है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित प्रो. आशुरानी, कुलपति डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा ने सबसे पहले संस्थान को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी। उन्होंने देश और विदेश में हिंदी की उपयोगिता और इसमें अनुवाद की संभावनाओं की चर्चा की। सारस्वत अतिथि डॉ. बालमुकुन्द पाण्डेय, राष्ट्रीय संगठन सचिव, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, ने सर्वप्रथम संस्थान को बधाई दी। उन्होंने मदन मोहन मालवीय जी के जीवन की कुछ प्रेरक प्रसंगों की चर्चा की। उन्होंने कहा मालवीय जी प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा विद्यार्थी केंद्रित होनी चाहिए।

लेक्चर पद्धति विदेशी शिक्षा प्रणाली है। धर्म धारण करने के लिए है न कि केवल पूजा पाठ की पद्धति। मालवीय जी के जीवन और विचारधारा को आधार मानकर शिक्षक एवं शिक्षा का विकास करना चाहिए। आदर्श शिक्षक की परिकल्पना की जा सकती है। भारतीय चेतना के प्रकाश में पुस्तक लेखन की परंपरा बढ़ानी चाहिए। मालवीय जी ने शिक्षा के स्थान पर विद्या का प्रयोग किया।

मुख्य अतिथि प्रो. मनीष जोशी सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली ने अपने वक्तव्य में कहा कि शिक्षकों की परिस्थिति और मानसिकता बदलनी चाहिए। विद्यार्थियों को पढ़ाने की पद्धति बदलनी होगी। डॉ. राधाकृष्णन ने कहा था कि जब कहते हैं कि हम जानते हैं तो हम पढ़ना ही छोड़ देते हैं। अंत में उन्होंने संस्थान को शुभकामनाएं देते हुए आगे संस्थान की मदद करते रहने के लिए आश्वासन दिया।

अंत में अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. सुरेंद्र दुबे, उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल ने संकाय संवर्धन कार्यक्रम में चयनित विषय के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा कि संस्थान की यह उपलब्धि एक ऐतिहासिक और गौरवपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने सभी वक्ताओं का आभार व्यक्त किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति शिक्षा को अंग्रेजों की शिक्षा नीति से मुक्त कराने का एक महत्वपूर्ण पहल है।

प्रो. धनजी प्रसाद, कार्यक्रम निदेशक-मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन, डॉ. मयंक त्रिपाठी, कार्यक्रम संयोजक द्वारा किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के विभागों के विभागाध्यक्ष, शैक्षिक सदस्य, स्वदेशी एवं विदेशी विद्यार्थी उपस्थित थे। साथ ही केंद्रीय हिंदी संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक, शैक्षिक सदस्य तथा लघु अवधि कार्यक्रम/ संकाय संवर्धन कार्यक्रम के प्रतिभागी भी प्रत्यक्ष/ ऑनलाइन रूप से कार्यक्रम से जुड़े थे। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया।

इस अवसर पर मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र और सूचना एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग के नवीनीकृत पद्मश्री मोटूरि सत्यनारायण भाषा प्रयोगशाला तथा डॉ. कमल किशोर गोयनका संगणक प्रयोगशाला का भी लोकार्पण माननीय अतिथिगण द्वारा किया गया।

पाणिनि व्याख्यानमाला संपन्न

पाणिनि व्याख्यानमाला का पंचम व्याख्यान दिनांक 28 नवंबर 2025 को सफलतापूर्वक आयोजित किया गया, जिसमें प्रख्यात समाजविज्ञानी, साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त लेखक एवं टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, मुंबई के कुलपति प्रो. बद्रीनारायण वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। इस महत्वपूर्ण व्याख्यान का विषय 'हिंदी में समाज विज्ञान' था, जिसने सभी विभागों के विभागाध्यक्षों, शिक्षकों और स्वदेशी एवं विदेशी छात्रों की व्यापक भागीदारी देखी। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी ने की, जबकि प्रो. हरिशंकर शैक्षिक समन्वयक के रूप में उपस्थित रहे। अनुसंधान एवं भाषा-विकास विभाग के संयोजक एवं विभागाध्यक्ष डॉ. अरिमर्दन कुमार त्रिपाठी ने कार्यक्रम के संयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाईऔर डॉ. पुरुषोत्तम पाटील ने मंच संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन का कार्य कुशलतापूर्वक संपन्न किया।

संरक्षक
प्रो. सुरेन्द्र दुबे

प्रधान संपादक
प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी

संपादक
डॉ. अपर्णा सारस्वत

संपादन सहायक
शिवानी चौहान

टाइप सेटिंग
योगेन्द्र सिंह राणा

मुद्रक : एजुकेशनल स्टोर्स, गाजियाबाद (उ.प्र.)

संस्थान समाचार में प्रकाशित समाचारों का स्रोत केंद्रीय हिंदी संस्थान के विभिन्न विभागों/केंद्रों से प्राप्त सामग्री है। संस्थान समाचार के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया और सुझाव संपादक के पास भेज सकते हैं। संस्थान समाचार का ई-मेलः sansthansamacharkhs2021@gmail.com

सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल आगरा-282005 द्वारा वितरण हेतु दिल्ली केंद्र से प्रकाशित।